हनुमान चालीसा /Hanuman Chalisa

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि

बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।

बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन-कुमार

बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।

रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥

महावीरविक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥

कंचन बरन विराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा॥

हाथ बज्र और ध्वजा विराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥

शंकर सुवन केसरी नन्दन । तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाए॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥

सहस बदन तुम्हरो जश गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥

जुग सहस्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं॥

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना॥

आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक ते काँपै ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।

साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्ध नौ निधि के दाता । अस वर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को भावैं। जन्म जन्म के दुःख बिसरावैं ॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई॥

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥

जो शत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महासुख होई॥

जो यह पढ़ें हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥॥

दोहा

॥पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड .-
AtoZpe.in